BC-21-22

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

यश पब्लिकेशंस

नई दिल्ली, भारत

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

ISBN : 978-93-85647-03-1

प्रथम संस्करण : 2022

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर

मूल्य : ₹ 1495/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
2/9, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

127

23. 'मैला आँचल' : ग्रामीण संस्कृति का प्रतिबिंब
डॉ. परविंदर कौर महाजन 131

24. 'मैला आँचल' में चित्रित राजनीतिक यथार्थ
डॉ. सुजितसिंह परिहार 139

25. 'मैला आँचल' नामकरण की सार्थकता
डॉ. दीपक पवार 143

26. ग्रामीण संवेदना के कथाकार रेणु
डॉ. पुष्पा गोविंद गायकवाड 151

27. रेणु का भाषा वैभव
डॉ. गोपाल यतिराज बाहेती 158

28. स्वाधीनता की चेतना और युवा मन : 'कितने चौराहे'
डॉ. सतीश यादव 166

29. 'कितने चौराहे' उपन्यास का मनमोहन
योगेश्वर रामजी कु-हाडे 172

30. कितने चौराहे : एक संस्कार प्रधान उपन्यास
इंदलकर सुभाष शंकरराव 175

31. 'परती परिकथा' के स्त्री पात्र
नयन भादुले-राजमाने 181

32. 'परती परिकथा' उपन्यास में आँचलिक संवेदना
डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे, डॉ. संतोष विजयकुमार येरावार
डॉ. शेख रजिया शहेनाज शेख अब्दुला 185

33. फणीश्वरनाथ रेणु का 'परती परिकथा' : आँचलिक पात्र जितेन
डॉ. संजय गणपती भालेराव 192

34. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में पुरुष पात्र
डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की 197

35. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास एवं भाषा-शैली सौंदर्य
(परती परिकथा उपन्यास के संदर्भ में)
डॉ. हणमंत पवार

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

SELU

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में पुरुष पात्र

डॉ. अर्चना चंद्रकांतराव पत्की

हिंदी साहित्य आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणू के जीवन कथा-व्यथा उनके साहित्य की कथा है। क्योंकि किसी भी श्रेष्ठ साहित्यकार का व्यक्तिगत जीवन,उनकी कृति उनसे अलग नहीं कर सकते। रेणु जी अपने समाज के साथ इस तरह जुड़े हुए थे, कि उनसे अलग उनका साहित्य हो ही नहीं सकता। उनका समग्र साहित्य उनके 'अनुभूति से अभिव्यक्ति' तक का सफर कहा जा सकता है।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के पश्चात ग्रामाँचल को उसकी समग्रता में देखने का प्रयास स्वतंत्रता के आंचलिक उपन्यासों में है। आंचलिक उपन्यासों के विकास का श्रेय फणीश्वरनाथ रेणु का है। उनके उपन्यासों को पढ़कर यह महसूस होता है कि ग्रामीण पार्श्वभूमि में देहातीलोक-जीवन, जन-जीवन का बहुत ही सूक्ष्म यथार्थ एवं सजीव चित्रण उनके उपन्यासों में चित्रित हुआ है।

प्रस्तुत आलेख में फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों के पुरुष पात्रों का अध्ययन करते समय रेणु हमें निराश नहीं करते। क्योंकि आंचलिक उपन्यास मेंनायक नहीं होता या कोई नायिका नहीं होती। वैसे तो आंचलिक उपन्यास का समग्र अंचल ही नायक के रूप में उभरकर सामने आता है।

फणीश्वरनाथ के उपन्यास मैला आँचल, परती-परीकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे, पल्टूबाबू रोड, कलंकमुक्तिआंचलिक उपन्यास है। इनके उपन्यासों में इस आँचल के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक समस्याओं को रेणू जी ने बड़ी प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। पुरुष पात्रों द्वारा हमारी स्मृति पर अमिट रूप से छाप छोड़ने का सामर्थ्य रेणु के उपन्यासों में दिखाई देता है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

मैला आँचल और परती-परकथा में अनेक पात्र प्रशांत, जित्तन, कालीचरण, बालदेव, बावनदास, विश्वनाथप्रसाद है। उपन्यास को पढ़ते समय यह पात्र सर्वथा विश्वसनीय, सजीव और विशिष्ट व्यक्तित्व संपन्न पात्रों की वैविध्य पूर्ण दृष्टि से अपने पूरे कथा संसार को रेणू जी ने जगमगा दिया है। अज्ञेय जी ने 'धरती का धनी' शीर्षक संस्मरण में लिखा है, "उपन्यासकार की शक्ति की एक माप यह भी है कि उसने कितने स्मरणीय चरित्र हमें दिया है। इस कसौटी पर भी रेणू खरे उतरे हैं, उनके चरित्र न केवल हमारे स्मृति में बस जाते हैं वरन् हमारे अंतर्विवेक को ऐसे रंग जाते हैं कि हम बार-बार जीवन में मिलने वाले चरित्रों को इन्हीं काल्पनिक चरित्रों की नाप से नापने लगते है।"[1]

प्रशांत 'मैला आँचल' के उपन्यास के पात्रों में डॉक्टर प्रशांत सर व प्रमुख पात्र है। प्रशांत ऐसा पात्र है जो विपरीत परिस्थितियों में इंटर सहित उत्तीर्ण करने के बाद पटना मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरी परीक्षा उत्तीर्ण की। डॉक्टर होने के बाद सरकार की ओर से विदेश जाकर अगली पढ़ाई करने के लिए उसे जो छात्रवृत्ति मंजूर कर दी गई उसे प्रशांत ने अस्वीकार कर दिया। वह गाँव में रहकर के निर्धन और अविकसित जनता के कल्याण में जुड़ जाता है ।उसके निर्णय को सुनकर प्रिंसिपल ने उसे सफलता पाने का आशीर्वाद दिया तथा मीटिंग में जाते समय ममता ने कहा "ओह! प्रशांत तुम कितने बड़े कितने महान।"[2]कमला के प्रेम ने उसे प्रेम की स्नेह वत्सदयकी पवित्रता का परिचय दिया।इस प्रकार दुनिया के सुंदर रूप में देखने तथा रोगों के मूल का पता लगाकर नई दवा का अविष्कार कर लोगों की स्वस्थ रखने की आशा उसके मानवतावादी दृष्टिकोण को ही अभिव्यक्त करती है।[3] तात्पर्य डॉ प्रशांत उपन्यास में आदर्शवादी, देशभक्त, नई चेतना का प्रतीक, मानवीय करुणा से द्रवित अंतःकरण वाला, आशा और आस्था के पात्रों से भरा एक स्वप्नदर्शी पात्र के रूप में उभर कर आया है।

बालदेव गोप का चरित्र बहुत ही रोचक और सांकेतिक है। बालदेव का चरित्र इस बात का भी द्योतक है कि बिना शिक्षा और राजनीतिक समझ के राजनीति में प्रवेश करना कितना खतरनाक है। उसका चारित्रिक पतन और जातीयता की भावना के प्रति आकर्षण आज के नेताओं के चरित्र में आ रही गिरावट की ओर इशारा करता है।यह पात्र उस नेता का प्रतीक बन कर आया है जो हमारे अविकसित गाँव को और भी पिछड़ेपन की ओर धकेल रहे है।

कालीचरण 'मैला आँचल' का एक महत्वपूर्ण सक्रिय और जीवंत पात्र है। जो पिछड़े और उपेक्षित भारतीय अंचल की नई पीढ़ी को मुखरित करता

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

SELU

है ।उसमें अद्‌भुत संगठन क्षमता है। उपन्यास में कालीचरण कम पढ़ा लिखा अज्ञानी और नासमझ पात्र के रूप में आया है।

बावनदास का चरित्र 'मैला आँचल' उपन्यास में सर्वाधिक विशिष्ट है। उपन्यास में बावनदास अल्पकाल के लिए है परंतु सशक्त रूप में उभर कर आया है। **विश्वनाथ प्रसाद** तत्कालीन शोषण पर आधारित व्यवस्था का प्रतीक पात्र है। धूर्त, चालाक एवं स्वार्थी पात्र के रूप में उभर कर आया है।

रेणू के 'परती-परीकथा' उपन्यास के पुरुष पात्रों में जितेंद्र, लूत्तो, कुबेर सिंह, मकबूल, मिम्मल मामा आदि पुरुष पात्र है। इस उपन्यास में जितेंद्र सब प्रमुख पात्र है, वह शहर से पढ लिखकर आता है फिर भी समाज के लिए कुछ करने की भावना से बेचैन है। वह जन्मतः कलाप्रेमी, अर्थ लोभ से रहित है। सतर्क बुद्धि, उदार, प्रेममय स्वभाव, मानवतावादी दृष्टिकोण रखने वाला एक आदर्श व्यक्ति के रूप में उपन्यास में उभरकर आया है।

लूत्तो उपन्यास में जितेंद्र के बाद महत्वपूर्ण पात्र है। जितेंद्र आंचलिक लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, तो लूत्तो आंचलिक जीवन पर पड़ने वाले लड़ैया राजनीतिक प्रभाव का बदला लेने की भावना लूत्तो के चरित्र की केंद्रीय तत्व है।

कुबेरसिंह यह धूर्त, चालबाज नेताओं का प्रतिनिधि चरित्र है। कूरुप, भद्दा व्यक्तित्व है। सारे राजनीतिक हथकंडों का प्रयोग कर अपनी स्वार्थ साधना पूर्ण करता है। अवसरवादी चरित्र के रूप में उपन्यास में उभरकर आया है। **मकबूल** ऐसा पात्र है जो मिम्मल मामा के शब्दों में मकबूल डुप्लीकेट है। **मिम्मल मामा** परती-परीकथा के विशिष्ट पात्र में से है। मिम्मल मामा जित्तन से अत्याधिक प्यार करता है।

दिर्घतपा 'उपन्यास के प्रमुख पात्र है- बागे, सुखमय घोष। उपन्यास में स्त्री पात्र अत्याधिक है। **बागे** एक आदिवासी युवक है वह अपने आप को दलाल कहने से जरा भी संकोच नहीं करता। अवैध बिक्री करवाकर धनार्जन करता है। **सुखमय घोष** बंगाली है। वह श्रीमती आनंद का क्लर्क है, युवक होते हुए भी बुढा दिखता है। उपन्यास में सभी पात्र वर्तमान सामाजिक कुरुपताओं की क्रूरतम् रूप में उपस्थित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

रेणू जी के 'जुलूस' उपन्यास में सौ पात्र है पर हम यहाँ पर पुरुष पात्रों की ही चर्चा करेंगे पुरुष पात्रों में तालेवर गोढी, पारस, जयरामसिंह, हरिप्रसाद जादव। उपन्यास में **तालेवर गोढी** जो सबसे धनी, शिक्षित तथा संपन्न परिवार

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

का व्यक्ति है। वह केवल सवर्णों औरतों को भैरवी बनाता था। वह अज्ञान ग्रस्त जनता का अपनी तंत्र विद्या, ओझा-गुनी होने की आड़ में शोषण करता है। वह ही दमीन काम वासनाओंकी पूर्ति के लिए तंत्र विद्या को साधन बनाता है। धन का अत्याधिक लोभी है। देखने में वह अत्यंत सीधा साधा और भोला भाला लगता है किंतु वास्तव में बहुत ही ढोंगी तथा धूर्त है। **जयरामसिंह, हरिप्रसाद** यादव तथा उपन्यास के सभी पात्र (पवित्रा को छोड़कर) अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। पात्र में वैविध्य का अभाव है।

फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास'कितने चौराहे' के प्रमुख पात्र प्रायः किशोरावस्था के पात्र है। इस उपन्यास में करीब 60 पात्र है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र मनमोहन, मनमोहन केकाका, हफिज साहब आदि है।

मनमोहन उपन्यास का प्रमुख पात्र है। उपन्यास में बचपन से लेकर किशोर अवस्था तक के विकास की दिशा तय करने वाले अनेक घटना प्रसंग है। परिवार में अत्यंत लाडला है। उसके व्यक्तित्व पर स्कूल परिवेश का, स्कूल में प्राप्त अनुभव का गहरा प्रभाव है। मनमोहन का महाविद्यालय की शिक्षा लेते समय 'करो या मरो', 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सक्रिय सहभाग रहा है। वह कुछ समय पश्चात वह अपना नाम जाति, गोत्र, संस्कार सब कुछ परित्याग कर इसकी दुसरी बार जन्म लेता है। सन्यास मार्ग अपनाकर सच्चीदानंद नाम धारण करता है।

उपन्यास का दूसरा पात्र **मनमोहन के काका** है। मनमोहन के काका ने मनमोहन को माँ का प्यार दिया है। मनमोहन के काका के चरित्र में विचारानुसार व्यवहार करने की प्रवृत्ति है। इसलिए उनके चरित्र में आचार-विचार में अंतर नहीं है।

फणीश्वरनाथ रेणू को अपने उपन्यासों में पुरुष पात्रों का चित्रण अत्याधिक सूक्ष्मता के साथ किया है। रेणू जी ने युग परिवर्तन को स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करने के लिए आंचलिक परिवेश को चुना है। उनके उपन्यासों में पुरुष पात्रों के चरित्र-चित्रण तथा कथा की अपेक्षा अंचल की समग्रता की अभिव्यक्ति को महत्त्व दिया है। रेणू जी ने अपने उपन्यासों में जनजीवन के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करने के लिए अनेक पुरुष पात्रों को प्रस्तुत किया है। उनके पुरुष पात्रों के नाम चरित्र विशेषताओं का परिचय देते हैं। इनके उपन्यासों में पुरुष पात्रों का अपना अलग महत्त्व है। आंचलिक उपन्यास के उपन्यासकार का ध्यान पात्र-विशेष पर ना होकर संपूर्ण अंचल का मानवीकरण करना होता है। अतः यहाँ कोई भी पात्र

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU
PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

नायकत्व ग्रहण नहीं कर पाता। किसी पात्र विशेष का यहाँ अलग से पात्र ना होकर उसका व्यक्तित्व अंचल के हेतु समर्पित होता है। वह प्रत्येक कार्य अंचल के लिए करता है कुल मिलाकर देखें तो रेणु के उपन्यासों के पुरुष पात्र अत्याधिक वैविध्य पूर्ण है। एक ओर वह क्रुर, हिंसक, भोगी, खलनायक के रूप में है तो दूसरी ओर वह मर्यादा पुरुषोत्तम भी है तीसरी ओर अपने परिवार के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष करने वाला व्यक्ति है। एक ही समय में वह उनके भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1. स्मृतिलेखा में संकलित रेणू विषयक संस्करण, पृष्ठ क्रमाँक 114।
2. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ क्रमांक 64
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी, हिंदी उपन्यासों का शास्त्रीय विवेचन, पृष्ठ क्रमांक 109

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
U. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner